मासिक पत्रिका मार्च 2018

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल प्रधान | विजय भाटिया मंत्री | अमर सिंह पहल कोषाध्यक्ष

मनु और नीत्शे

-पं. चमूपति- **साभार:** 'परोपकारी', फरवरी (प्रथम) 2018

[इतिहास के पंडित श्री राजेन्द्र 'जिज्ञासु' से हमें यह लेख पाप्त हुआ तो हमें 'ऐतिहासिक कलम' स्तम्भ के लिये एक महत्त्वपूर्ण सामग्री मिल गई। लेख 'आर्य' पत्र में प्रकाशित हुआ था। इस पर समय इस प्रकार लिखा है-**लाहौर**-वैशाख 1979, तदनुसार मई 1923 (अंक 1)-सम्पादक]

स्वामी दयानन्द के विषय में उनके किसी प्रतिपक्षी ने कहा था कि, उन्हें दर्शन कम आते थे। हेतु, कि उनकी पुस्तकों में दार्शनिक चर्चा कम है। जैसी सूक्ष्म युक्ति-प्रयुक्ति की शृंखला, श्री शंकराचार्य, श्री रामानुजाचार्य आदि के ग्रन्थों में मिलती है, वह स्वामी के ग्रन्थों में नहीं मिलता दर्शनों की मोटी-मोटी बातें तो स्वामी जी स्थान-स्थान पर उद्धृत करते हैं। परन्तु प्रत्येक दर्शन के, न तो अवान्तर **वादों** में ही पड़ते हैं, न उन प्रश्नों को छेड़ते हैं जिन पर प्रत्येक दर्शन के आधुनिक विद्यार्थी अपनी **सारी** बुद्धि का बल व्यय कर देते हैं। स्वामी जी के सत्यार्थ प्रकाश में दर्शनों की अपेक्षा मनु का प्रमाण अधिक दिया गया है।

स्वामी जी दर्शन कितना जानते थे, हम आज इस विषय में नहीं पड़ना चाहते। भारतवासियों के हृदय में एक भ्रम यह डाला गया है कि, भारत दर्शनों की भूमि है। यहाँ **विचार** ही पर बल दिया जाता है। विचार मात्र से बाल की खाल उतार लेने में भारतीय कुशल है। आजकल के भारतीय विचारक, ऐसी सम्मतियों को अपनी प्रशंसा समझते है। और यह कहकर ऐंठते हैं कि, हमने स्थूल **आचार**-सम्बन्धी बातों का उल्लंघन कर, गम्भीर विचार के समुद्र में जा कर डुबकी लगाई है।

संसार की गति विचित्र है। उधर दयानन्द को **तर्क का अवतार** कहा जाता है। आर्य समाज का यह एक **दोष** बताया जाता है, कि यहाँ जितना वाद-विवाद है, उसका **शतांश** भी भक्तिकाण्ड तथा कर्मकाण्ड पर बल नहीं दिया जाता। परन्तु तार्किक हैं कि दयानन्द के तर्क से भी, सन्तुष्ट नहीं। इन्हें सत्यार्थ प्रकाश के स्थान में दूसरा 'शारीरिक भाष्य' चाहिये।

जिन लोगों ने तार्किकों का सूक्ष्म-तर्क पढ़, उसकी एक-एक समस्या को सुलझाने में घण्टों और दिनों को व्यतीत किये हैं, उनकी दृष्टि में दयानन्द का तर्क, **कार्य-सिद्धि** मात्र का तर्क है। हमारी समझ में ऋषि दयानन्द ने अपने धर्म के दार्शनिक पक्ष पर **उतना** ही बल लगाया है, जितना जनसमुदाय की धार्मिक आवश्यकता के लिये **पर्याप्त** है। धर्म का मुख्य अंग आचार है। भारतवर्ष की जीवन परम्परा में आचार का स्थान विचार से **ऊँचा** रहा है। भारत का जनसमुदाय, कभी तार्किक न था। तार्किक प्रत्येक जाति में हुए हैं। ऐसे ही भारतवर्ष में भी थे। जाति की जाति को तार्किक अथवा सूक्ष्मविचारिणी कह देना, उसे ऐहिक सुखों से जो स्थूल हैं और आचार से सम्बन्ध रखते हैं, वंचित करना है। यह एक राजनीतिक **गप्प है** कि आर्य जाति, परलोक पर दृष्टि रखती है, **इस** लोक पर नहीं।

हमारे देश में दर्शन का अध्ययन गिने-चुने लोग ही करते थे। साधारण जनता का व्यवहार 'स्मृतियों' से सिद्ध किया जाता था। इस स्मृति-पुंज का नाम **धर्मशास्त्र** था। स्वामी दयानन्द इस मर्म को जानते थे, कि उनके अनुयायी केवल

विचारक नहीं, किन्तु आचार-सम्पन्न होंगे। उन्हें समाज की **स्थापना** करनी थी। शंकराचार्य आदि की भाँति किसी **वाद** की नहीं। अत: स्वामी आवश्यकता भर 'दर्शनों' का दिग्दर्शन मात्र कराकर अपनी पुस्तकों का अधिकांश सदाचार की ही व्याख्या की भेंट कर गए हैं।

आज यह बात तो लोक में प्रसिद्ध है कि, 'आर्य-दर्शन' संसारभर के दर्शन में सर्वोच्च है। परन्तु हमारे आचार-शास्त्र के विषय में यह प्रशंसा के वाक्य प्रयुक्त **नहीं** किये जाते। हम भी इसी में मस्त हो रहते हैं कि हमने विचार में उन्नति की है। और आचार में ? यह क्षेत्र **हमारा नहीं**। हम यह भूल जाते हैं कि धर्म नाम ही आचार का है। जैसे संसार की समस्याएँ सुलझाने में ऋषियों का मस्तिष्क संसारभर का **नेता** रहा है और जहाँ तक धर्म का सम्बन्ध, आत्मा-परमात्मा की **गहन** ग्रन्थियों के सुलझाने से है, हम **विचारक संसार** के जाने-माने गुरु हैं। उसी प्रकार '**आचार-शास्त्र**' में भी हमारा स्थान किसी से पीछे नहीं। हम इस विषय में 'अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना,' अपने लिए तथा अपनी जाति के लिये श्रेयस्कर नहीं समझते।

किन्तु जर्मनी के प्रसिद्ध विचारक 'नीत्शे' (Nietzche), जो जर्मनी के वर्तमान शक्तियुग का प्रवर्तक है। और जो राजनीति को **कपट** की दलदल से निकाल कर सूधी-खरी बातों पर आश्रित करना चाहता है, की पुस्तक The Twilight of Idols, के उद्धरण हम प्रस्तुत करते हैं-

'One breathes more freely after stepping out of the Christian atmosphere of hospital and poisons into this more salubrious, **loftier** and more spacious world. What a **wretched** thing the 'New Testament' is, beside Manu, what an evil odour hangs around it!'

अर्थात् 'ईसाई मत की आरोग्य-रोगीशालाओं और विषों के वायुमण्डल से निकलकर, मनुष्य इस (मनु के) स्वास्थ्यप्रद, उच्च तथा विशाल जगत् में श्वास लेता है। मनु के सामने '**नया नियम**' (बाइबल) एक क्षुद्र वस्तु है। इस पर दुर्गन्धि छाई है।

एक और पुस्तक The Will to Power में, यही महाशय लिखते हैं:-

'Manu's words again are simple and dignified. **Virtue** could hardly rely on her own strength alone. Really it is only the **fear** of punishment that keeps men in their limits and leaves every one in peaceful possession of his own'.

अर्थात् 'मनु के शब्द खरे और आत्म-प्रतिष्ठायुक्त हैं। **पुण्य** केवल अपने बल पर आश्रित नहीं रह सकता। दण्ड के **भय** से ही मनुष्य अपनी सीमा में रहते हैं, और प्रत्येक को शान्तिपूर्वक अपना-अपना स्वत्व भोगने देते हैं।'

इन्हीं महाशय 'नीत्शे' की एक और पुस्तक Antichrist में यह वाक्य पाए जाते हैं:-

'The fact that in Christianity **'holy' ends** are entirely absent, constitutes **my objection** to the means it employs..... My feelings are quite the reverse when I read the Law-book of Manu..... an **incomparably** intellectual and superior work.... It is replete with **noble** values, it is filled with a feeling of perfection, with a saying of yea to life, and a triumphant sense of well being in regard to itself and life. The sun shines upon the whole book. **All** those things which Christianity smothers, with its bottomless **vulgarity**- procreation, woman, marriage, are here treated with earnestness, with reverence, with love and confidence.'

अर्थात् ईसाई मत में 'पवित्र' उद्देश्यों का सर्वथा अभाव हैं यहीं उसके प्रयुक्त किये साधनों पर मेरा आक्षेप है।..... परन्तु जब में मनु का धर्मशास्त्र पढ़ता हूँ तो मेरे हृदय के भाव इसके सर्वथा विपरीत हो जाते हैं।..... यह पुस्तक विचारपूर्ण और उच्चतम पुस्तक है।..... यह श्रेष्ठ परखों से पूर्ण है। पूर्णता के भाव से भरा पड़ा है। जीवन को हाँ कहता है। जीवन के सम्बन्ध में इसका भाव स्वस्थता का विजयात्मक भाव है। जिन विषयों को ईसाईमत अपने अथाह गंवारूपन से दबा छोड़ता हे, जैसे सन्तानोत्पत्ति, स्त्री, विवाह, उन पर (मनु के शास्त्र में) उत्साह, पूजा, प्रेम और विश्वासपूर्वक विचार किया गया है।

इसी पुस्तक से एक और उद्धरण देकर हम इस लेख को समाप्त करेंगे। नीत्शे लिखते हैं:-

'I know of no book in which so many delicate and kindly things are said to woman, as in the Law book of Manu, these old grey beards and saints have a manner of being gallant to woman which perhaps cannot be surpassed.'

अर्थात् 'मुझे किसी और पुस्तक का ध्यान नहीं जिसमें स्त्रियों के प्रति इतने मृदु, दयापूर्ण भाव प्रकट किये गये हों।

जिनते मनु के धर्मशास्त्र में। यह भूरी दाढ़ी सन्तजन स्त्रियों के प्रति ऐसे ढंग से (सत्कार) दर्शाते हैं कि उससे आगे स्यात् असम्भव है।'

पाठकों ने देख लिया कि भारत का धर्मशास्त्र आज भी जगत् का वैसा ही प्रशंसा-पात्र बन रहा है, जैसा कभी भारतीय दर्शन था। समाज का आधार धर्मशास्त्र है। उसके पढ़ने, समझने और उस पर आचरण करने की सारे मानव समाज को आवश्यकता है।

अब पाठक समझ जाएंगे कि ऋषि दयानन्द ने मनु को क्यों इतना सराहा है। ईसाई मत के **पक्षपात** से जो विचारक, चाहे वह पाश्चात्य हो या प्राच्य, मुक्त होता जाएगा, वही मनु के गुण गाएगा। आजकल की शिक्षा के **ईसाई रंग** में रंगे जाने के कारण मनु के नियम लोगों की आँखों में नहीं जँचते। परन्तु वास्तव में मानव प्रकृति के अनुकरण योग्य यदि कोई धर्मशास्त्र है तो वह है मनु का। इसमें काल्पनिक सिद्धान्त नहीं, **क्रियात्मक** सच्चाइयाँ हैं। ■■

मार्च 2018 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
04	डॉ. महावीर मीमांसक (9811960640)	वेद में विज्ञान और पदार्थ विज्ञान का विवेचन।
11	श्री लक्ष्मीकान्त	सुमधुर भजन
18	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	आर्य समाज : स्थापना और स्वामी जी की उससे आकांक्षाएँ।
25	श्री वेद कुमार वेदालंकार (9810106562)	पं. गुरुदत्त का अद्भूत जीवन, त्याग एवं विद्वत्ता।

सम्पादकः सतीश चन्द्र सक्सेना

फरवरी मास में प्राप्त दान राशिः—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
M/s एल.ई. ट्रैवल वर्ल्ड प्रा. लिमिटेड	20,000/-	श्री प्रवीण बहल	5,100/-	श्री ध्रुव बहल	2,100/-
		M/s जगदम्बा मेडिको	5,000/-	श्री संजीव भल्ला	2,100/-
M/s अनुपमा स्वीट्स	10,000/-	श्री सुभाष चन्द्र ढिंगरा	5,000/-	श्री के.के. कौल एवं परिवार	1,750/-
डॉ. दीपा कपूर	10,000/-	M/s राज कन्सट्रक्सन कम्पनी प्रा. लिमि.	5,000/-	श्री अमर सिंह पहल	1,100/-
M/s ज्वैलर्स एम. राजसन्स	8,500/-			सुश्री आदर्श भसीन	1,100/-
M/s बाली एवं कम्प. प्रा.लि.	8,500/-	श्रीमती सन्तोष रहेजा	5,000/-	श्री संजीव खुराना	1,100/-
श्रीमती ईशा बहल	7,500/-	आनन्द बुक डिपो C/o श्री एस.एल. आनन्द	5,000/-	श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा	1,100/-
श्री राजीव कुमार चौधरी	5,100/-			श्री सुनील अबरोल	1,100/-
श्री सुनील बहल एवं श्रीमती नीरा बहल	5,100/-	श्री इन्द्र सैन साहनी	3,100/-	श्री आशीष शर्मा S/o श्री बाला अशोक शर्मा	1,100/-
		श्रीमती वीना कश्यप	3,300/-		
श्रीमती मंजु बहल एवं श्री अरुण बहल	5,100/-	श्रीमती लक्ष्मी टंडन	2,500/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-
		श्री कुनाल बहल	2,100/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	1,000/-
M/s कृष्णा साहिल कंसट्रक्शन प्रा. लिमि.	5,100/-	श्री सुशील कुमार जौली	2,100/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-
		श्री अभिषेक बहल	2,100/-	श्री कमलेश कुमार वोहरा	500/-
श्रीमती माला बहल एवं श्री अनिल बहल	5,100/-	श्री अर्जुन बहल एवं श्रीमती निधि बहल	2,100/-	श्रीमती बाला अशोक शर्मा	500/-
				श्री डी.एन. मनचन्दा	500/-

फरवरी माह में पुरोहितों द्वारा एकत्रित धनराशि :

❖ श्री वेद कुमार वेदालंकार ₹ 3,700/- ❖ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ₹

वैदिक सैन्टर के लिए प्राप्त दान राशि : ❖ M/s महाशय दी हट्टी ₹ 25,00,000/-

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH–GREATER KAILASH–I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

होली की उमंग

चन्दन की खुशबु और पुष्पों की सुगन्ध के संग

दिनांक : 02 मार्च 2018 (शुक्रवार)

पुष्पों तथा चंदन द्वारा-तत्पश्चात् जलपान

समय : प्रातः 8:00 से 9:30 तक

पर्व ये ऐसा जब रंग सारे खिलते हैं,
जीवन पे पसरी नीरसता मिटती है,
होती है प्रसन्नता सभी ओर,
नयी उमंग में सब संग बढ़ते हैं।

होली
की हार्दिक
शुभकामनाएँ

GENERAL PHYSICIAN / PAEDIATRICIAN / GYNECOLOGIST

Dr. Anand Kumar Seth
M.B.B.S., D.C.H.
Gen. Phy. & Child Specialist
Mon. - Sat. 9.00 to 01.00 pm

Dr. Vimla Ticku
M.B.B.S.
Gynecologist
Mon.-Sat. 9:30 am - 12:30 pm

Dr. M. Abhey
M.B.B.S.
Gen. Physician
Mon. & Fri. 11 am - 12 pm